International Journal of Professional Development
Vol.9,No.1,Jan-June 2020 ISSN: 2277-517X (Print), 2279-0659 (Online)
Impact Factor:2.892 (IFSIJ)

मनु स्मृति का सामाजिक महत्व वर्तमान परिप्रेक्ष्य: एक अवलोकन

डॉ0 संगीता कुमारी
एम.ए., पीएचडी। (संस्कृत), पटना विश्वविद्यालय
बिषवसराय नगर नहर के पास
बेली रोड पटना-801503

परिचय

स्मृतिग्रन्थों में निर्विवाद रूप से मनु स्मृति सर्वप्रमुख एवं सर्वमान्य है । ऐसा प्रतीत होता है की यह सर्वप्राचीन भी है इसके रचना काल के विषय में कुछ ठोस नहीं कहा जा सकता है फिर भी विद्वानों ने विभिन्न साक्ष्यों के आधार पर मनु स्मृति का काल निर्धारण करते हुए इसे पाँचवीं शताब्दी के पूर्व का माना जाता है वर्तमान मनु स्मृति बारह अध्यायों तथा 2694 श्लोकों में निबद्ध है। यह आगे चल कर सबसे प्रसिद्धस्मृतिग्रंथ प्रमाणित हुआ फलस्वरूप इस पर अनेक टीका कार हुए जिसमें मे धामिथि कुल्लूक और गोविंदराज के अतिरिक्त नारायण राघवानन्द नंदन और रामचंद्र प्रमुख है। मनुस्मृति अन्य स्मृतिग्रंथों का आधार भी माना जाता है। भारतीय मान्यताओं के अनुसार मनु प्रथम समाज व्यवस्थापक तथा मानव जाति के आदि पुरुष है, मनु के द्वारा प्रतिपादित नियमों का उल्लेख मनुस्मृति में सुरक्षित है। मनुस्मृति का दूसरा नाम मानव धर्मशास्त्र भी है, मनु आचार को ही मरम धर्म मानते हैएऔर इसकी विशुद्ध व्याख्या मनुस्मृति में परिलक्षित होती है।

मनुस्मृति का महत्व (वर्तमान)

वर्तमान भारतीय समाज संक्रमण काल से गुजर रहा है। संकरणकालीन परिस्थितियाँ सर्वदा कई समस्याओं को उत्पन्न करती है। हमारे भारतीय समाज के सम्मुख भी अनेक बौद्धिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक समस्याएँ विद्यमान है। इसमें प्रथम तो अत्यंत महत्वपूर्ण समस्या है। पुरातन एवं नविन प्रथाओं एवं पद्धतियों के मध्य सामान्जस्व स्थापित करना है, एक ओर तो हमारे समाज में प्राचीन व्यवस्थाओं एवं मान्यताओं का व्यापक प्रभाव हैए तो वहीं दूसरी ओर आधुनिक वैज्ञानिक मान्यताएँ समानता लोकतंत्र एवं समाजवाद के सिद्धांत आर्थिक और सामाजिक नियोजन तथा कल्याणकारी सामाजिक पुनर्रचना की मान्यताएँ भी काफी शक्तिशाली है । समाज में नवीनता के प्रति प्रबल आग्रह परिलक्षित हो रहा है तथा स्वाभाविक रूप से अतीत के विश्लेषण के प्रति मन शंकालु हो सकता है और इसकी उपयोगिता को अस्वीकार कर सकता है। लेकिन यदि हमें एक सशक्त तथा समृद्ध भविष्य की रचना करनी है तो अतीत के ज्ञान एवं अनुभवों से लाभ उठाने का प्रयास भी करना होगा ।

वर्तमान समय में यह प्रश्न विचारणीय है कि इतनी समृद्ध बौद्धिक एवं सांस्कृतिक सम्पदा तथा उच्चतम उपलब्धियों के रहने के उपरांत भी वे कौन सी मूलभूत दुर्बलताएँ थीं जिनके कारण हमारा समाज भारतीय राष्ट्र की इतनी अधोराती हुई तथा राजनीतिक एवं आर्थिक दृष्टि से यह विदेशियों के सम्मुख टिक न सकी। प्राचीन भारतीय .....के चिंतन के विषय में एक भ्रान्ति व्याप्त है कि भारतीयों का चिंतन ठोस सामाजिक समस्याओं एवं यथार्थ से संबंधित न होकर मात्र दार्शनिक एवं कल्पना होकर रह गया। परन्तु भारतीय सामाजिक संगठन की सैद्धांतिक व्याख्या के संबंध में मनुस्मृति से अधिक प्रामाणिक ग्रन्थ और कोई ग्रंथ नहीं माना जाता है विभिन्न पौराणिक आख्यानों दंतकथाओं आदि से सूक्ष्म अध्ययन से हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि मनुस्मृति अथवा मानव धर्मशास्त्र में वर्णित नियम लम्बी परंपरा की देन है मनुस्मृति की रचना किसी व्यक्ति के जीवन काल से संबंधित न होकर एक संपूर्ण ऐतिहासिक काल एवं परंपरा से संबंधित है जिसे हम वैदिक काल की संज्ञा दे सकते है। मनु स्मृति के अनुसार सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा ने विराट् पुरुष को उत्पन्न कियाएऔर उसी विराट् पुरुष से मनु की उत्पति हुई। मनु ही आदि पुरुष है जिन्होंने प्रजा की इच्छा से तप करके अन्य दसप्रजापति महाऋषियों को उत्पन किया जिनके नाम मरीचि अत्रिअंगिरा बुलिस्तस्य त्रदातु वशिष्ठ भृगु तथा नारद है।

मनु स्मृति का दूसरा नाम मानव धर्म शास्त्र भी है आज विज्ञान का युग है, विज्ञान का ही दूसरा पर्याय साश्त्र है। प्राचीन भारतीय परंपरा ने सामाजिक व्यवस्था लिए कुछ शास्त्रीय सिद्धांतों की विकसित किया था जो की मनु स्मृति में संग्रहित है।आधुनिक युग के समाजशास्त्र एक नया विज्ञान है जिसमे विभिन्न सामाजिक रचना के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। लेकिन हमारे प्राचीन भारतीय मनीषियों को तो पहले ही उन सभी महत्वपूर्ण विषयों पर अपने विचार प्रकट कर चुके है। आधुनिक समाजशास्त्र में मानवीय किया एवं व्यवहारों के अध्ययन पर जोर दिया जाता है मनु स्मृति में भी आचार को ही परम धर्म मानते हुए इसकी

बिसुद्ध व्याख्या की गई है। मनु स्मृति में प्रतिप्राय नियम किसी दिन की उत्पति नहीं है बल्कि संपूर्ण ऐतिहासिक काल का प्रतिनिधित्व करते है। मनु स्मृति में नियमों का प्रचलन किस काल से हुआ यह कहना अत्यंत कठिन है। क्योंकि इसमें प्रचलित नियम आज भी हिन्दू जीवन पद्धति के अभिन्य अंग है। प्रोफेसर व्हियुलर के मतानुसार मनु स्मृति विधान की सर्वाधिक प्राचीन पुस्तक है। इसकी रचना ईसा से दो सदी पूर्व और दो सदी बाद के काल मेंहुए। उन्होने मनु स्मृति में प्रयुक्त काबोज यवन तथा शक शब्दों को प्रस्तुत किया। इनका कहना है की इसी अवधि में भारतीयों का सम्बन्ध विदेशियों से हुआ। जगत की रचना की व्याख्या करते हुए मनु एक सर्वोच्या सत्ता में विश्वास रखते है। जिनकी इच्छा से ही विश्व में सृजन तथा विनाश होता है और वह ही जड़ चेतन सबका कारण अनन्त तथा सनातन है I

आधुनिक समाज शास्त्र एवं मनोविज्ञान में यह धारणा है की मानवीय जीवन ओर इसके पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है वही हमारे प्राचीन भारतीय मान्यता में भी भौतिक जगत पर मनुष्य के आतंरिक गुणों एवं नैतिक नियमों का प्रभाव पड़ता है। समाज के नैतिक जीवन में व्याप्त अराजकता प्रकृति के क्षेत्र में भी अराजकता पैदा कर देती है।

आधुनिक समाजशास्त्र की विकासवादी मान्यताओं के अनुसार समाज एक अल्प विकसित आदिम अवस्था से निरंतर अधिक विकसित और समांनत अवस्था की ओर बढ़ता जाता है परन्तु भारतीय
मान्यता
इसके विपरीत है। प्रथम रचना प्रभु के द्वारा की गई मानी जाती है ए अतः वह सर्वश्रेष्ठ है। प्रलय के बाद नैतिक कारणों से प्रभु नयी सृष्टि की रचना करते है। सृष्टि के संपूर्ण अवधि मनु ने चार कालों में विभाजित किया है। सतयुग त्रेता द्वापर तथा कलियुग। यह चारों युग विभिन्न प्रवृतियों तथा युगों का प्रतिनिधित्व करते है। प्रथम युग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है परन्तु जैसे जैसे समय बीतता गया उसमे अनेकों बुराईयां व्याप्त होती गई। कलयुग में भौतिक एवं दैवी मान्यताएं समाप्त हो जाएँगी तब पुनः इस सृष्टि का विनाश होगा प्रलय की स्थिति आएगी और पुनः सर्वशक्तिसंपण्य ईश्वर नयी सृष्टि की रचना करेगा।

चक्रात्मक परिवर्तन की यह प्रक्रिया कुछ दार्शनिक मान्यताओं पर आधारित है। इनमें मुख्य है कर्म का सिद्धांत आत्मा की अमरता तथा पुनर्जन्म। कर्म के सिद्धांत के अनुसार हमारा आज का जीवन अतीत के कर्मों का फल है। कोई भी व्यक्ति जिस प्रकार का कर्म करेगा आने वाले दिनों में उसे उसके अनुसार ही फल प्राप्त होगा। किया गया कर्म कभी भी नष्ट नहीं होता। एक तुच्छ धर्म युक्त कर्म भी बड़े बड़े पाप से मुक्ति दिला सकता है। ईश्वर ही करमध्यांत हैं। कर्म के सिद्धांत के अनुसार अतीत का काल समाप्त हो चुका है वर्तमान अतीत के कर्मों का फल है। लेकिन भविष्य का स्वर्णिम जीवन अब भी शेष है जो वर्तमान के सद्कर्मों पर आधारित है। धर्म की सीमा में मनुष्य स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है जब तक कर्म की श्रंखला समाप्त नहीं होती तब तक आवागमन तथा पुनर्जन्म चक्र चलता रहेगा। मनु स्मृति के अनुसार जो मनुष्य प्रवृति मार्ग का अनुसरण करता है वह कर्मानुसार फल पता है और जो निवृति मार्ग का अनुशीलन करता है अर्थात किसी प्रकार के फल की कामना नहीं करता है उसे मोक्ष्य मिलता है।

मनु के अनुसार कर्मों के तीन स्रोत हैं, मन वाणी तथा देह इन्ही से उत्पन्न शुभाशुभ कर्मों के द्वारा मनुष्य उत्तम मध्यम तथा अधर्म गतियों को प्राप्त होतें हैं। दस अशुभ कर्म माने गए हैं। कर्म सिद्धांत के साथ साथ गुण सिद्धांत भी महत्वपूर्णहैं।जो सम्वेदना पूर्ण प्रति युक्त शांत शुध्य तथा कलेश रहित है। वह संतोषगुन है। जो दुःख का कारण प्रीतिरहित और कामवृति का करता है वह राज है जो असत सत् के विचार से सुण्या तर्करहित तथा विषय में लिप्त कराने वाला है वह तम है। हिन्दू समाजशास्त्री इस बात से परिचित थे, कि प्रत्येक व्यक्ति की प्रवृति एवं क्षमताओं में विभिन्नता होती है। प्रवृति एवं क्षमताओं में विभिन्नता होती है। किसी भी व्यक्ति पर जीवन के उद्देश्य तथा दायित्व बजात गेद नहीं जा सकते। आज के युग की मान्यताओं के अनुसार यह प्रश्न उठ सकता है कि वह कौन सी कसौटी थी, जिसके आधार पर लोगों की योग्यता तथा क्षमता का निर्धारण होता था? आधुनिक प्रतिस्पर्धा के युग में ‘‘किसी को भी जन्म के आधार पर सक्षम अथवा दुर्बल नही माना जा सकता। इसका उत्तर परंपरागत भारतीय व्यवस्था ने कर्म के सिद्धान्त और पुनर्जन्म के द्वारा देने का प्रयास किया है। किसी का जन्म ब्राहम्ण कुल में इसलिए होता है। क्योंकि उसके पूर्व जन्म के कर्म उच्च थे। ब्राहम्ण कुल में जन्म लेने के उपरान्त भी यदि व्यक्ति के कर्म उच्च नहीं है तो, उसकी स्थिति निम्न ही मानी जाएगी। योग्यता की कसौटी बुद्धि और आध्यात्मिकता होनी चाहिए। शिक्षण का उद्देय मनुष्य के जीवन को इस प्रकार अनु बनकर समाजिक कल्याण तथा अपने अध्यात्मिक विकास में योग दे सके।

मनु के अनुसार जीवन के चार पुरूषार्थ माने गए है- धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष। मोक्ष जीवन का अंतिम एकमात्र उद्देश्य नहीं है यह सत्य हे कि जीवन में धर्म का महत्व है लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि काम तथा अर्थ गौण है! धर्म द्वारा नियमित काम तथा

अर्थ का सामंजस्य जीवन के लिए श्रेयस्कर है। मनुस्मृति धर्मशास्त्र में धर्म की उच्चता पर नहीं अपितु तीनों के उचित समन्वय पर बल देती है।

मनुष्य की रचनात्मक कृतियों को बुद्धि उच्चतर सांस्कृति हमेशा के लिए मुक्त करना है तो समुदाय के मध्य इसकी आर्थिक आवश्यकता भी तुष्ट होनी चाहिए। धर्म अर्थ तथा काम के समलित रूप से मनु ने ''त्रिवर्ग'' की संज्ञा दी है। अपने कर्तव्य का समूचित पालन ही धर्म है और यह मोक्ष की प्राप्ति में सहायक होगा।

मनुस्मृति के वर्णन मे भारत को भौगोलिक स्थिति तथा उस प्रदेश के लोगो के स्वभाव पर भी प्रकाश पड़ता है। जैसे-हिमालय तथा विध्याचल पर्वतों के मध्य प्रयाग से पश्चिम में तथा विनश नाम से पूर्व का प्रदेश मध्य प्रदेश कहा जाता था।

समय तथा परिस्थिति के अनुरू अन्य स्मृतियों में लिखी गई बातें भी जोड दी गई है जैसे याज्ञवल्क्यु स्मृति में विनायक पूजा, गृह शान्ति तथा पाॅच प्रकार की दिव्य परिज्ञाओं का विस्तृत वर्णन किया गया है, जबकि मनुस्मृति में केवल दो का वर्णन किया गया है। मनुस्मृति में ब्राहम्ण को शूद्र कन्या से विवाह की अनुमति दी गई है जबकि याज्ञवल्क्य स्मृति में इसका धोर विरोध किया गया है। विधवा सपति की उत्तराधिकारी मानी जानी चाहिए अथवा नहीं इस पर भी मनुस्मृति में कोई स्पष्ट विधान नहीं है वहीं याज्ञवल्क्य ने समस्त उत्तराधिकारियों में विधवा को प्रथम स्थान दिया है। मनु दयूत के विरोधी है और याज्ञवल्क्य उसे राज्य के नियंत्रण में रखकर उसे आय का साधन मानते है।

मनुस्मृति का इतना व्यापक प्रभाव भारतीय जीवन पर क्यों पड़ा इसके पीछे कई कारण माने गए है। सबसे पहले तो जीवन के सभी पात्रों से संबंध रखने वाली समस्याओं पर इस पुस्तक में प्रकाश डाला गया है। इसकी उत्पति के विषय में दैवि विधान के मान्यता है जो इसे अन्य स्मृतियों की तुलना में ऊँचा उठा देती है। इस प्रसंग में कुमारस्वामी का यह कथन विशेष महत्व का है ''मनु के धर्मशास्त्र एवं चाणक्य के अर्थशास्त्र में शायद विश्व के सर्वश्रेष्ठ समाजशास्त्रीय अभिलेख सुरक्षित है इन ग्रंथों ने धार्मिक दर्शन को सामान्य संस्कृति एवं राष्ट्रीय राजनीति के आधार के रूप में स्वीकार किया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. धर्मशास्त्र का इतिहास - (प्रथम भाग) पृष्ठ- 43
2. बीस स्मृतियां (प्रथम खंड) भूमिका पृष्ठ-18
3. कगे 'हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र' प्रथम खंड पृष्ठ - 134
4. मनु धर्मशास्त्र, पृष्ठ - 5, 6
5. मनुस्मृति 1-32, 33, 34 श्लोक
6. स्वायंभुवस्यास्य मनोः षडंवश्या मनोवाडपर सृष्टवन्तः प्रजाः स्वाः स्वा महान्मानौ महौजसः
7. कगे 'हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र' खंड पृष्ठ - 134
8. ''हिस्ट्री ऑफ इंडिया' ' पंचमावृति, पृष्ठ - 11
9. याज्ञवल्क्य स्मृति - 1-349
10. ''कर्मव्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्
11. मनुस्मृति-अध्याय 1, श्लोक 64 से 73 तक

www.ijpd.co.in